RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 49 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 11 मई 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

कज्जाकी लुटेरों का वह आंतक

डॉ.नारायण सिंह पांगती से बातचीज

भारत-तिब्बत व्यापार के दौर में जोहारी व्यापारियों का सामान लूटने वालों का पीछा किया था शेर सिंह पांगती ने

जर्मनी शोधार्थी एल्मार ग्रेपा के अध्ययन के बाद डॉ.आर.एस.टोलिया व सुरेन्द्र सिंह पांगती से प्रेरित होकर पुस्तक भी आ चुकी है

Hot pursuit of Kazakh Bandits by a Johari Tradar

एक जोहारी व्यापारी द्वारा कज्जाकी लुटेरों का पीछा

कार्यालय प्रतिनिधि

दुनिया का कालचक्र हमेशा दुश्वारियों से घिरा रहा है। अपने वर्चस्व, अपनी भूख, अपने शौक के लिये लड़ते-भिड़ते देशों व गिरोहों की अनगिनत कथा कहानियाँ इतिहास में हैं। जहाँ शान्ति की कामना की जाती है, वहाँ भी कोई न कोई अड़चन रही है। बात करते हैं भारत-तिब्बत सम्बन्धों और इनके बीच होने वाले व्यापार की तो पता चलता है कि हमेशा से हिमालयी राज्यों व देशों का सम्बन्ध मधुर रहा है लेकिन आक्रान्ताओं की नीयत और अत्याचार ने इन शान्त वादियों को भी नहीं छोड़ा। ऐसा ही आतंक एक बार कज्जाकी लुटेरों का था और इनका पीछा करने वालों में बहादुर शौका व्यापारी स्व.शेरसिंह पांगती का नाम है। जर्मनी के शोधार्थी एल्मार ग्रेपा ने अपने अध्ययन में भी इसकी खोज की थी, बाद में डॉ.आर.एस. टोलिया व सुरेन्द्र सिंह पांगती से प्रेरित होकर डॉ.एन.एस.पांगती-श्रीमती जया पांगती ने इस महत्वपूर्ण इतिहास को पुस्तक का रूप भी दे डाला। 'एक जोहार व्यापारी द्वारा कज्जाकी लुटेरों का पीछा' की चर्चा से पहले डॉ.पांगती के बारे में जान लेते हैं। एक थे- रामसिंह पांगती जी। इनके दो पुत्र हुए- शेरसिंह और लाल सिंह। शेरसिंह जी की अगली पीढ़ी में मनोहर सिंह, नारायण सिंह। डॉ. नारायण सिंह पांगती जिन ऊँचाईयों पर हैं, इनका बचपन उतना ही परीक्षादायी रहा है। मिलम में 1944 में जन्मे पांगती जी माइग्रेशन परम्परा के साक्षी हैं और ग्राम चिलकिया (नाचनी से पहले पुल के पास) में बचपन की पढ़ाई के बाद अपने रिश्तेदारों के पास रहकर तेजम के लोधियाबगड़, भैंसखाल, टिमटिया स्कूली शिक्षा लेने लगे। 1962 में मुनस्यारी से हाईस्कूल का प्रथम बैच (विज्ञान वर्ग) के छात्र पांगती जी कक्षा 11 की परीक्षा बेरीनाग से और इण्टर अल्मोड़ा से किया।

शेष पृष्ठ 2 पर

एक शताब्दी का इतिहास थी हरकी देवी

धीरज उप्रेती

हल्द्वानी। 26 अप्रैल 2026 रविवार के दिन श्रीमती हरकी देवी पत्नी स्व. बाला सिंह पांगती का निधन हो गया। दरअसल इस लोक और उस लोक की इस आवत की प्रक्रिया के बीच उनका जाना एक शताब्दी का जाना सा लगता है। श्रीमती हरकी देवी 101 वर्ष 4 माह 06 दिन तक इस लोक में रहीं। इस प्रकार एक शताब्दी का इतिहास थीं वह। उनका रहना सबके लिये आशीर्वाद स्वरूप था।

हमेशा खुशमिजाज रहने वाली अमा हरकी देवी अब यादों में रहेंगी। अपने परिजनों बीच रहते हुए वह अपनी वृद्धावस्था में भी कुछ गुनगुनाते, तकली कातते, कुछ कहने-सुनने की मुद्रा में दिखाई देती थीं। उन्होंने हल्द्वानी के कमलुवागांजा रोड स्थित नन्दा होम में अपने सुपुत्र कवीन्द्र सिंह पांगती के आवास पर अन्तिम सांस ली। एक सदी के जीवन में उन्होंने दुनियादारी के बहुत उतार चढ़ाव देखे लेकिन अपनी संस्कृति पर नाज था।

एक सदी में हिमालय कितना बदला, जोहार कितना बदला, माल-भाबर कितना बदल गया, ऐसे सवालों पर यदि कोई शोध करे तो अमा हरकी देवी जैसे लोगों का होना जरूरी है। 'पिघलता हिमालय' को अपनी इस वरिष्ठ चिन्तक का हमेशा संरक्षण रहा है, सो बार-बार ऐसे अवसर आए कि उनसे उनके बारे में कुरेदा जाए। उम्र के उत्तरार्द्ध में भी वह कभी युवा तो कभी छोटे बच्चों सी हो जाती और सहज भाव से वह बातें बताती जो अब दुर्लभ होंगी।

स्व. श्रीमती हरकी देवी पांगती के पति स्व. बाला सिंह पांगती अपने जमाने के ग्राम प्रधान रहे हैं। इनके पुत्र पुत्रियों में डॉ. कुन्दन सिंह पांगती, स्व. दमयन्ती वृजवाल, श्रीमती चन्द्रा मर्तोलिया, नवराज सिंह पांगती, कवीन्द्र सिंह पांगती और इनकी अगली पीढ़ियां हैं।

अम्मा हरकी देवी अब हमारे बीज नहीं हैं लेकिन उनकी सहेजी गई स्मृतियों को जब-जब टटोला जाएगा वह सामाजिक सर्वेक्षण, शोध कार्य में पक्की लकीर होंगी। वह जब यादों के पिटारे को खोलती थीं तो सबसे पहले उन्हें बचपन याद आता था जब एकदम बाल्य अवस्था में विवाह की प्रथा थी। वह कहती हैं- 'नानू छी, कै फाम न्हा, नानू पुटुल बणैं.....।' (छोटी थी, दुनियादारी का पता नहीं था, सामान का छोटा का पुन्तुरा बनाया. ....।) बूढ़ी अम्मा का सुलझी-उलझी बातों को सुनते रोमांच होता। कुल जमा वह कहती हैं- 5-7 साल की अवस्था में विवाह हो गया था। कपकोट के डोटिला गाँव में भैंसखाल से बारात आई और दो दिन की पैदल यात्रा करते हुए वापस भैंसखाल पहुँची। छोटी होने के कारण मुझे घर की सीढ़ी चलने में दिक्कत होती थी। उन दिनों के रिवाज के हिसाब से आवत-जावत में मेहमानों की खूब खातिरदारी हुई।

वाकेई दुर्गमता के वह पुराने दिन कितने कठिन थे लेकिन सहज-सरल लोगों की बात-विश्वास ने समाज को हर ओर जोड़ा और सुरक्षित रखा हुआ था। हरकी देवी बताती हैं कि विवाह तो हो गया लेकिन ससुराल में भी वह अन्य बच्चों के

शेष पृष्ठ 5 पर

अब यादों में रहेंगी अम्मा

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

मातृशक्ति का कैसा सम्मान

इन दिनों में देश में 'नारी शक्ति वन्दन संविधान संशोधन विधेयक' को पारित न होने के बाद पक्ष-विपक्ष अपने-अपने तरीके से एक-दूसरे को आरोपित कर रहे हैं। कहते हैं- 'इनके कारण महिलाओं का आरक्षण नहीं मिल पाया।' सदन में क्या हुआ, किसने क्या कहा, कितना बहुमत था- सबको सब पता है। फिर कितने ही विधेयक पास होने हैं और कुछ नहीं हो पाते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि उसे सड़क-चौराहे पर नारेबाजी करते हुए अपने पद की गरिमा को भूल जाएं।

इसी मामले को लेकर उत्तराखण्ड में भी राजनीति हो रही है। भाजपा की ओर से मशाल जुलूस सहित तमाम आयोजन हो चुके हैं जिसमें कहा जा रहा है कि महिला आरक्षण बिल गिराने में विपक्ष का हाथ है। विपक्ष नहीं चाहता है कि महिलाएं आगे बढ़े। कांग्रेस सहित विपक्ष द्वारा भी सत्ता पक्ष भाजपा के खिलाफ सभा, जुलूस किये जा रहे हैं और कहा जा रहा है कि महिलाओं को प्रदेश में पूर्ण रूप से आरक्षण दिया जाए। भाजपा नहीं चाहती है कि महिलाओं को अवसर मिले।

यह तो रही महिलाओं को राजनीति के क्षेत्र में आरक्षण की बात और दूसरी ओर देखें तो हालात इतने भयावह हैं कि महिलाओं के शोषण में सफेदपोशों का नाम सबसे आगे है और ऐसी महिलाओं का नाम भी आगे है जो अपने लिये किसी भी हद तक जा सकते हैं। सोशल मीडिया के इस जमाने में कई प्रकरण उजागर हो चुके हैं और कई पर आरोप लग रहे हैं, ऐसे में मातृशक्ति का कैसा सम्मान? विधायक-सांसद बना देने मात्र से मातृशक्ति का सम्मान नहीं हो सकता है। क्या विधायक या सांसद आम जनता के बीच से कोई महिला आसानी से बन जाएगी? राजनीति के घटबढ़ खेल में आम गृहणी जो देश के लिये भी विचारवान हैं, क्या उसे अवसर मिल सकता है या उसका उपयोग ही होगा। इस पर सभी को एकजुट होना चाहिये।

फसक

दाज्यू, विवाद में भी मजा लूट रहे ठैरे

बीच सड़क और चौराहे में भी कपड़योव होने लगी है बल

दाज्यू, वाद-विवाद तो हर जगह होता रहता है लेकिन विवाद का मजा कलजुग में लिया जा रहा है। रसोई से लेकर गुस्सलखाने तक राजनीति घुस चुकी है। साबुन का झाग इतना है कि पता ही नहीं चलता क्या होने वाला है। बीच सड़क और चौराहे में भी कपड़योव होने लगी है बल। विधानसभा के विशेष सत्र के दौरान सदन और सड़क पर उचाट ही उचाट हो रहा था। विधायक बंशीधर ज्यू लटपटी गये और बोले- '27 में दिखेंगे जुमले जब एक-एक महिला ठपा-ठपा-ठपा-ठपा कमल के फूल पर ठोकेगी ना....।' दाज्यू, ठपा-ठप और टका-टक का जमाना है। कितना भर भी कुछ कर लो, बड़े शहरों में विवाद का मजा लूट रहे ठैरे। विवाद का निपटारा करने वाले बहुत कम हैं दाज्यू आजकल। पता नहीं चलता कब किसको, किसकी नजर लग जाए।

दाज्यू, नैनीताल के मल्लीताल क्षेत्र में एक परिवार के विवाद ने हिंसक रूप ले लिया था। पुलिस को जाकर स्थिति को नियन्त्रित करना पड़ा। हल्द्वानी से चोरगलिया साली की शादी में गए जीजा ने फन्दे में लटकर जान दे दी। परिवार के विवाद के बाद नाराज जीजा ने यह कदम उठाया बल। उधर रामनगर में झपट्टामार गैंस का पर्दाफास हुआ है। पकड़ा गया तीन लोगों का गैंग झपट्टामारी से दाल-रोटी चला रहा था। दाज्यू, अपनी दाल-रोटी के चक्कर में राह चलने वालों की खूब ऐसी-तैसी करने में कौन जो पीछे है?

नैनीताल कलेक्ट्रेट की पार्किंग में कार में एडवोकेट पूरन सिंह भाकुनी ने खुद को गोली मार ली। कार के डैशबोर्ड में सुसाइड नोट में उन्होंने अपनी गम्भीर बीमारी से परेशान होने की बात की है। भगवान जाने वकील साहब को क्या हो गया। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। इसी प्रकार सितारगंज में खेत की आग बुझाने के प्रयास में किसान गुरबाज सिंह की दर्दनाक मौत हो गई। उधर गदरपुर विधायक अरविन्द पाण्डे ने जमीन धोखाधड़ी में लगे आरोपों की नार्को टेस्ट और वैज्ञानिक तरीके से जाँच की मांग की है। दाज्यू, रुद्रपुर में एक बार फिर से पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल ने भाजपा के अनु.जाति मोर्चा महामंत्री पर ओवरलोड डम्पर के नाम पर वसूली का आरोप लगाया है। दाज्यू, आप जानने ही वाले हुए मौका-ए-बहार रंग-नूर सब हाजिर-जवाब चल रहा है।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

कज्जाकी लुटरों.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

सन् 1965 में किंग जार्ज मेडिकल कालेज लखनऊ से एमबीबीएस किया। सन् 1962 के बाद अपने क्षेत्र से यह पहले युवा थे जिन्होंने एमबीबीएस किया था। इससे पहले चन्द्र सिंह रावत, जसवन्त सिंह धर्मशक्तू अपने समय के एमबीबीएस किये हुए थे। सन् 1972 में राजकीय चिकित्सा सेवा में आने के बाद 1984 में प्रमोशन पर डिप्टी सीएमओ का कार्यभार ग्रहण किया। अल्मोड़ा में सीएमएस बेस अस्पताल में रहने के बाद नैनीताल फिर 2002 में सेवानिवृत्त डाक्टर साहब ने अपनी चिकित्सा सेवा का लाभ विस्तार रूप में किया। इनके कार्यों में श्रीमती जयवन्ती (जया) पांगती जी का हरक्षण सहयोग आगे बढ़ने में फलीभूत हुआ है। सुपुत्र डॉ.मंयक, सुपुत्री श्रीमती गुन्जन, सुपुत्र- डॉ. भानू अपने कार्यक्षेत्र के अलावा सामाजिक सरोकारों से जुड़े हैं।

पांगती जी के अपने घरेलू राग से ज्यादा सामाजिक आलाप रहे हैं। तभी तो उन्होंने अपने पूज्य पिता का स्मरण करते हुए अनमोल कृति समाज को दी। डा. आर.एस.टोलिया के साथ बार-बार चर्चा करते हुए इन्होंने डॉ.शेरसिंह पांगती को उचकाया कि प्राप्त कुछ दस्तावेजों पर कार्य हो। जोहार मिलन केन्द्र के सहयोग से सन् 2009 में दुर्गा सिटी सेन्टर हल्द्वानी में उस पुस्तक का विमोचन भी हुआ। वह केवल पुस्तक नहीं बल्कि एक ऐसा दस्तावेज है जो इतिहास के रूप में उन यादों को बताता है कि किस परिस्थितियों से हम जुड़े रहे और कैसे थे हमारे बुजुर्ग। इसके अलावा भी डॉ. पांगती की लगन समाज को जोड़ने के रूप में हमेशा से है जो सकारात्मक ऊर्जा देती है।

डॉ.पांगती अपने बचपन को याद कर कहते हैं- पिता शेरसिंह जी और माता श्रीमती रूकमणी देवी के शैशवकाल में दिवंगत होने पर चाचा लाल सिंह जी और चाची श्रीमती उखा देवी का साया हमारे ऊपर था। पिता स्व.शेर सिंह पांगती के बारे में बचपन से ही खूब सुना था कि वह तिब्बत में डाकुओं का पीछा करते हुए काश्मीर गये और वहाँ से कई फोटो लाए थे। चिकित्सकीय शिक्षा पूरी कर पांगती जी राजकीय अस्पतालों में कार्यरत थे, एक बार अवकाश में अपने घर मुनस्यारी गये तो एक लिफाफा दिखा जिस पर देवनागिरी लिपि में चाचा जी का नाम-पता लिखा था। इस लिफाफे में 50 पेज का अग्रेजी में लिखा आलेख था। पूछने पर चाचा जी ने बताया कि कुछ वर्ष पूर्व एक जर्मनी नौजवान मुनस्यारी आया था उसने दाज्यू (बड़े भाई) स्व.शेर सिंह के बारे में पूछताछ की, उसी ने भेजा है।

यहीं से डॉ. पांगती को पिता जी का वह सूत्र पता चला जो शैशवावस्था में वह पिता के जाने के बाद नहीं जान पाये थे कि उनके पिता कैसे जो थे। लिफाफे में ग्रेपा का आलेख कई बार पढ़ने के बाद पांगती जी ने तय कर लिया कि अपने बुजुर्गों की इस याद को वह संजोयेंगे और शोधार्थी ग्रेपा का धन्यवाद किया कि उसने खोज में उनके पिता के बारे में जानकारी पुष्ट की। डॉ. पांगती ने ने अपनी पत्नी जया जी के साथ निश्चय किया किया कि जर्मनी से आकर ग्रेपा ने जिस कार्य को खोजा उसे सार्वजनिक किया जाए, इसके लिये ग्रेपा और ब्रिटिश लाइब्रेरी से स्वीकृति भी ले ली। इस कार्य में डॉ.शेरसिंह पांगती का योगदान भी रहा।

भारत-तिब्बत व्यापार विषय को लेकर पिघलता हिमालय बराबर रोचक जानकारी देता रहा है। सन् 1941 में कज्जाकी लुटेरों द्वारा तिब्बत में जोहार (भारतीय) व्यापारियों का सामान लूटने तथा व्यापारी शेरसिंह पांगती द्वारा उन लुटेरों का पीछा किये जाने की घटना कम रोचक नहीं है। ग्रेपा के शोध में भी यह कहा गया कि 1980-90 के दशक तक इस घटना के प्रत्यक्षदर्शी तथा कज्जाकी लुटेरों से पीड़ित व्यापारी जीवित थे। जिनकी सहायता से वह सम्पूर्ण घटनाओं से अवगत हो सका। ग्रेपा ने म्यूनिख यूनीवर्सिटी (जर्मनी) से अपना पंजीकरण करा कर दो-तीन वर्षों तक मुनस्यारी, थल और हल्द्वानी स्थित जोहार के तत्कालीन तिब्बती व्यापारियों से सम्पर्क स्थापित किया। साथ ही धरमशाला (हिमांचल प्रदेश) स्थित तिब्बतन लाइब्रेरी और ब्रिटेन के इण्डिया आफिस लाइब्रेरी आदि स्थानों से इन कज्जाकियों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण अभिलेख उपलब्ध करने में अथाह परिश्रम किया।

इसी शोध प्रबन्ध का उल्लेख करते हुए हुए डॉ.पांगती बताते हैं- भारत की आजादी से पूर्व अथवा तिब्बत का चीनी प्रशासन के अधीन आने से पहले भारत और तिब्बत दो देशों के इस सीमावर्ती क्षेत्र में निवास करने वालों के बीच सदियों से जो व्यापारिक सम्बन्ध था, उन सम्बन्धों का विश्वसनीय रूप में परिपालन करते हुए ये व्यापारी अपनी बेशकीमती व्यापारिक वतस्तुएं इन तिब्बती मित्रों के पास अथवा बौद्ध मठों में छोड़ आते थे और यह सामान सुरक्षित रहता था। तिब्बती लोग अपने इन भारतीय मित्रों को धोखा देना महान पाप समझते थे परन्तु मध्य एशिया के जिस खानाबदोस समुदाय ने लूटमार करना अपना व्यवसाय बना लिया हो, उनके लिये तिब्बत जैसे असहाय और शान्तप्रिय देश में लूटमार करना कोई असम्भव कार्य नहीं था। यहीं से लूट मचना आरम्भ हुआ।

अगस्त 1941 में इन कज्जाकी लुटेरों ने तिब्बत के उत्तरी पठारी मैदान च्यांग-थांग से लूट शुरू करते हुए कैलास मानसरोवर के निकटवर्ती क्षेत्र में प्रवेश किया। इनके भय से शौका (भारतीय) व्यापारियों ने भी अपना सामान तिब्बती मित्रों के पास रखकर जान उचित समझा। लेकिन कज्जाकी जुटेरे तो सिर्फ लूट जानते थे। इन्होंने जोहार के 43 व्यापारियों का लगभग 41 हजार रुपये का सामन लूट लिया, जिसमें राम सिंह रतन सिंह नाम के एक व्यापारिक फर्म का सबसे अधिक 13 हजार रुपये का सामान लूटा गया था। इन कज्जाकियों द्वारा लूटा गया सामान वापस प्राप्त करने के लिये इस फर्म के साहसी व्यापारी शेर सिंह पांगती ने कठिनाईयों का सामना करते हुए पीछा किया। बौद्ध धर्म के अनुयायी तिब्बती लोगों को सता रहे कज्जाकियों का आतंक जब अति हो गया था गरतोक के गरपन (राज्यपाल) ने इनकी रोकथाम व लूटे गये सामान को वापस प्राप्त करने की आशा से काश्मीर सरकार के अधिकारियों से निवेदन किया और स्वयं सेना के साथ पश्चिम की ओर प्रस्थान किया। साथ में जोहार के व्यापारी शेरसिंह पांगती भी थे।

कज्जाकियों ने काश्मीरी सेना की टुकड़ी पर हमला कर दिया परन्तु उन्हें पीछा हटना पड़ज्ञ। इस बीच ब्रिटिश रेजीडेन्ट से काश्मीर सरकार को पत्र प्राप्त हुआ कि भारत सरकार कज्जाकियों की गतिविधियों की पूर्ण जानकारी के बिना तिब्बत की सीमा के अन्दर अपनी सैनिक टुकड़ी भेजने की अनुमति नहीं देना चाहती है। इसके लिये शीत के दिनों में लद्दाख में वार्ता की जा सकती है। अक्टूबर में चार जोहारी व्यापारी चुसूल पहुंचे। शिविर में 40 सिपाहियों ने दमचौक के लिये प्रस्थान किया। चमचौक पहुंचकर उन्हें वहाँ की टुकड़ी को मजबूत करना था।

कज्जाकियों की ये कहानी बहुत लम्बी और रोचक है (फिर कभी)। फिलहाल पांगती जी की यादों को सलाम करते हुए बताते हैं- कज्जाकियों द्वारा लूट कर ले जाये गये सामान को प्राप्त करने के लिये शेर सिंह पांगती की भाँति गरतोक का गरपन भी तिब्बत सेना के साथ दमचौक तक गया था परन्तु कज्जाकियों के आत्मसमर्पण करने के पश्चात भी जब उन्हें कुछ भी प्राप्त न हो सकता तो मन मारकर वापस लौटते समय गरपन ने कज्जाकियों द्वारा छोड़े गये 600-700 भेड़-बकरियाँ एक आना 12 आने की दर से जोहार के व्यापारी मेघ सिंह, मानी सिंह को बेची, जो जोहार पहुँचने तक 400 ही रह गई थी। शेर सिंह पांगती ने पं.गोविन्द बल्लभ पन्त सहित तमाम बड़े नेताओं से मिलकर लूटे सामान को वापस लाने का यत्न किया लेकिन असेम्बली के 16 फरवरी 1962 की वार्ता में भाग लेते हुए गोविन्द वी देशमुख के प्रश्न के आधार पर जिन व्यक्तियों के सामान की क्षति हुई, उसके भुगतान के लिये सरकार निश्चय कर चुकी थी। परन्तु औलफ कारो ने घोषणा की कि कज्जाकियों ने जिन व्यक्तियों का सामान भारत से बाहर चुराया है, उन्हें किसी प्रकार की क्षतिपूर्ति नहीं दी जा सकती है। सीधा सा अर्थ था कि तिब्बत यानी देश से बाहर लूट के लिये तत्कालीन ब्रिटिश भारत सरकार ने किसी प्रकार अपना उत्तरदायित्व नहीं समझा। सवाल आज भी बना हुआ है जिसे एक जोहारी व्यापारी ने लड़ा था।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

खेती-किसानी

पर्वतीय क्षेत्र में कीवी और चाय उत्पादन से बढ़ेगी किसानों की आय

रतन सिंह किरमोलिया

पर्वतीय क्षेत्र का करीब करीब पूरा भू-भाग चाय और कीवी उत्पादन के लिए उपयोगी एवं मफुीद माना गया है। बाकायदा मिट्टी परीक्षण के बाद चाय और कीवी का बहुत उत्तम उत्पादन किया भी जा रहा है। यदि सचमुच में आम लोगों का और सरकार का सम्मिलित प्रयास परवान चढ़ जाए तो उत्तराखण्ड का सम्पूर्ण पर्वतीय इलाके के लिए चाय और कीवी उत्पादन एक बड़ा आर्थिक आधार बन सकता है। बशर्ते इन्हें सुनियोजित तरीके से बाजार उपलब्ध कराया जाए। कीवी से अच्छा आर्थिक लाभ लेने के लिए इसके प्रसंस्करण की व्यवस्था जरूरी है। इससे जूस, जैम, स्क्वैश,कैंडी जैसे तरह-तरह के बहुमूल्य उत्पाद बनाकर इसे दीर्घ अवधि तक सुरक्षित रखा जा सकता है। जो वर्ष भर तक उपयोग में लाया जा सकता है। इसके साथ साथ इसकी भण्डारण एवं विपणन की व्यवस्था करना भी बहुत जरूरी है।

हमारे पर्वतीय क्षेत्र की मिट्टी चाय उत्पादन के लिए बहुत उपयोगी है। हमारे पर्वतीय क्षेत्रों में अनेकों ऐसी जगहें हैं जहाँ अंगरेजों के समय में भी व्यापारिक मात्र में चाय का उत्पादन किया जाता रहा। आजादी के बाद धीरे-धीरे चाय के वे बगीचे समाप्त हो गए। दो ढाई दशक से यहाँ के कतिपय जागरूक लोगों द्वारा उत्तराखण्ड टी बोर्ड के सहयोग से कतिपय जगहों पर चाय के बगीचे विकसित किए गए। जो बहुत अच्छा उत्पादन दे रहे हैं। और इनमें धीरे धीरे वृद्धि हो रही है। बागेश्वर चमोली आदि जनपदों में चाय की फैक्ट्रियां भी लगाई गई हैं। यहाँ के चाय की विदेशों में बड़ी डिमाण्ड है। कुछ समाचारों के माध्यम से यह भी जानकारी मिलती है कि यहाँ की चाय स्वास्थ्यवर्धक तो है ही इसे कैंसररोधी भी बताया जा रहा है। इससे कई तरह की चाय तैयार की जा रही है। जैसे ग्रीन टी, ब्लैक टी , मसाला टी आदि।

चाय उत्पादन का जिम्मा यहाँ उत्तराखण्ड टी बोर्ड के पास है। परन्तु देखने में आ रहा है कि चाय उत्पादन में कोई विशेष अपेक्षित वृद्धि एवं सुधार नहीं हो पा रहा है। इसका कारण है उत्तराखण्ड टी बोर्ड कारगर तरीके से काम नहीं कर पा रहा है। न चाय श्रमिकों को समुचित सुविधाएं दी जा रही हैं और न उनसे सही तरीके से काम ही लिया जा रहा है। उनका न्यूनतम मानदेय बढ़ाया जाए एवं अन्य सुविधाएं दी जाएं और उनसे सही ढंग से काम लिया जाए। आजकल पर्वतीय क्षेत्र में काफी जगहों पर चाय की खेती की जा रही है। यहाँ की चाय अपनी स्वास्थ्यवर्धक विशेषता के लिए पहले ही काफी ख्याति अर्जित कर चुकी है। चाय की उपयोगिता एवं विदेशों में डिमाण्ड के महत्व को देखते हुए पर्वतीय क्षेत्र की खाली बंजर पड़ी भूमि में चाय की खेती को बढ़ावा दिया जा सकता है। इससे जहाँ बंजर होते जा रही भूमि से बेशकीमती चाय का उत्पादन किया जा सकता है। वहीं स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन भी होगा और लोगों की आय भी बढ़ेगी। इससे सरकार को भी अच्छा राजस्व प्राप्त होगा परन्तु इस ओर सरकार का ध्यान और रुझान न होने एवं उत्तराखण्ड टी बोर्ड की लापरवाही के कारण उत्तराखण्ड में चाय की खेती और चाय उत्पादन दम तोड़ता नजर आ रहा है। आवश्यकता है चाय उत्पादन की तरफ वरीयता से ध्यान दिए जाने की।

वर्तमान में उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र का पारम्परिक व्यवसाय खेती पशुपालन एवं बागवानी समाप्ति की कगार पर पहुँच चुका है। खेती को वन्य-जीवों से हो रहे नुकसान और मौसम की बड़ी मार झेलनी पड़ रही है। इसलिए यहाँ के अधिकांश किसान खेती से मुख मोड़ रहे हैं। खेती की जमीन निरन्तर बंजर होते जा रही है। पशुपालन भी दम तोड़ रहा है। चूंकि खेती और पशुपालन का बड़ा गहरा अंतर्सबन्ध होता है। एक कड़ी के कमजोर होने से दूसरी कड़ी का कमजोर होना स्वाभाविक है। इन्हीं से जुड़ी होती है बागवानी। बागवानी भी समाप्तप्राय होते जा रही है। बागवानी को भी वन्य-जीव बहुत नुकसान पहुँचा रहे हैं। इन तमाम तरह की परेशानियों के कारण काश्तकारों का ध्यान और रुझान इस ओर से धीरे धीरे हट रहा है। इन कारणों से खेती पशुपालन एवं बागवानी समाप्ति की ओर पहुँच रही है।

वर्तमान समय का अनुभव बताता है कि चाय और कीवी की खेती को वन्य-जीव कोई नुकसान नहीं पहुँचा रहे हैं। और उत्तराखण्ड का पर्वतीय क्षेत्र चाय की खेती के लिए बहुत उपयोगी साबित हो रहा है । इसलिए यहाँ चाय की खेती को बढ़ावा दिया जाना नितान्त आवश्यक एवं समय का तकाजा है।

इसके साथ साथ विगत दो ढाई दशक से यहाँ कीवी उत्पादन भी बहुत अधिक मात्रा में किया जा रहा है । कीवी यद्यपि विदेशी फल है। परन्तु मिट्टी परीक्षणों से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र की मिट्टी कीवी उत्पादन के लिए बहुत उपयोगी है। और कीवी उत्पादन से यह सिद्ध भी हो रहा है। सर्वविदित है कि कीवी एक बेशकीमती रोग-प्रतिरोधक क्षमता सम्पन्न स्वास्थ्य वर्धक फल है। इसलिए अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण यह बाजार में बहुत कीमती बिकने वाला फल है और देखने में आ रहा कि फिलवद्र इसे वन्य-जीव कोई नुकसान नहीं पहुँचा रहे हैं।

इन सभी हालात के मद्देनजर यहाँ के बंजर होते खेतों और अन्य बंजर भूमि में चाय और कीवी की खेती को बढ़ावा दिया जाना नितान्त आवश्यक है। हालांकि इनकी खेती के लिए भी जैविक खाद, जैविक कीटनाशक, तकनीकी मार्गदर्शन और गर्मियों में सिंचाई की जरूरत पड़ती है। सरकार और सम्बन्धित विभागों का सम्यक तकनीकी मार्गदर्शन मिल जाए और इसके प्रसंस्करण भण्डारण एवं विपणन की समुचित व्यवस्था हो जाए तो उत्तराखण्ड में चाय और कीवी उत्पादन किसानों की आर्थिकी को सुदृढ़ करने के लिए काफी हैं। इससे सरकार को भी अच्छा राजस्व प्राप्त हो सकता है।

ज्योतिष की बातें- 280

11 मई 2026 को मंगल स्वराशि मेष में प्रवेश करेगा। जहाँ पर कोई शुभाशुभ दृष्टि या युति भी नहीं होगी। इस कारण मंगल अत्यन्त बली रहेगा। अत: मंगल पराक्रम, खेलकूद आदि अपने कारक विषयों में अगले 40 दिन कुम्भ, वृश्चिक और मिथुन राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा तथा अन्य राशियों के लिए भी मंगल सामान्य शुभ रहेगा।

14 मई 2026 को शुक्र मित्रराशि मिथुन में प्रवेश करेगा वहाँ पर शुभग्रह गुरु से युति भी होगी । अत: शुक्र सांसारिक सुख आदि अपने कारक विषयों में अगले 24 दिन प्राय: सभी राशियों के जातकों को न्यूनाधिक रूप से शुभफल ही प्रदान करेगा।

14 मई 2026 को बुध मित्रराशि वृषभ में प्रवेश करेगा जहाँ पर सूर्य से युति भी होगी । अत: बुध बुद्धि, व्यवसाय आदि अपने कारक विषयों में अगले 15 दिन मेष, कुम्भ, धनु, तुला, सिंह व कर्क राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा।

15 मई 2026 को सूर्य शत्रुराशि वृषभ में प्रवेश करेगा जहाँ पर शनि की दृष्टि भी पड़ेगी अत: सूर्य बहुत निर्बल रहेगा फिर भी अगले एक माह सूर्य स्वास्थ्य, सम्मान आदि अपने कारक विषयों में मीन, धनु, सिंह व कर्क राशि के जातकों को अल्प मात्रा में शुभफल प्रदान करेगा।

वटसावित्री व्रत- यह व्रत ज्येष्ठ कृष्णपक्ष अमावस्या तिथि को मनाया जाता है। तदनुसार शनिवार 16 मई 2026 को सुहागिन महिलाएँ अपने पति की दीर्घायु के लिए यह व्रत सम्पन्न करेंगी।

शनि जयन्ती- ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या प्रात:व्यापिनी तिथि, तदनुसार शनिवार 16 मई 2026 को शनि जयन्ती का पर्व मनाया जाएगा।

अधिक मास प्रारम्भ- रविवार 17 मई 2026 से ज्येष्ठ अधिकमास प्रारम्भ हो जाएगा अत: अगले एक माह तक विवाह आदि मंगलकार्य तथा गृहप्रवेश आदि शुभकार्य स्थगित रहेंगे।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

डीएम ने किया रं म्यूजियम का भ्रमण

धारचूला। जिलाधिकारी आशीष भटगांई ने रं म्यूजियम और पुस्तकालय का भ्रमण कर वहाँ संरक्षित सांस्कृतिक धरोहरों का अवलोकन किया। उन्होंने संग्रहालय में रखी पारम्परिक, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्व की वस्तुओं की जानकारी ली और रं कल्याण संस्था के प्रयासों की सराहना की। म्यूजियम के निर्देशक डॉ. रवि पतियाल ने संग्रहालय में संरक्षित वस्तुओं के इतिहास, उनकी पृष्ठभूमि एवं क्षेत्रीय संस्कृति में उनके महत्व के बारे में बताया।

राजनीति के रंगढंग

दौड़धूप में लगे हैं चुनाव मैदान में ताल ठोकने वाले

2027 विधानसभा चुनाव के लिये राजनीति के रंगढंग बहुत बेढप चल रहे हैं। सूत्रों के अनुसार कई बड़े नेता अपनी पार्टी छोड़ इधर-उधर होने को तैयार हैं। इनके साथ छुटभैये तो शिफ्ट हो ही जाएंगे। साथ ही अपनी फाइलें सरकाने व अपने हित साधने के चक्कर में कुछ चुपचाप बने हुए हैं। कांग्रेस, भाजपा में जोरशोर से अफवाहें उड़ाने वाले भी लगातार अपनी चालों में उलझे हैं जबकि 'मन मन भावे मूढ़ हिलावे' की स्थिति में बड़े नेताओं को देखा जा सकता है।

बात सीमान्त क्षेत्र की धारचूला सीट की करें तो विधायक हरीश धामी ने खुली चुनौती दी है कि उनके खिलाफ चाहे सीएम लड़ें या भाजपा प्रदेश अध्यक्ष महेन्द्र भट्ट, उन्हें पता चल जाएगा। विधायक हरीश धामी ने कांग्रेस के मजबूत प्रत्याशी हैं लेकिन भाजपा ने जिस प्रकार से सेंध लगाते हुए अपनी गोटियां लगानी शुरू कर दी हैं, वह चुनाव घमासान की शुरुआत है। मुनस्यारी पालिका अध्यक्ष राजेन्द्र पांगती का भाजपा में शामिल होना भी इसका एक हिस्सा है।

कालाढूंगी सीट पर भाजपा टिकट को लेकर अभी से घिरती दिख रही है

-इधर-उधर होने वाले तैयार
-धारचूला सीट पर चुनौती
-कालाढूंगी में भगत का ऐलान

क्योंकि भाजपा विधायक बंशीधर भगत की भरपूर चाह है कि पार्टी उन्हें टिकट दे या उनके सुपुत्र विकास भगत को। दूसरी ओर पार्टी से दावेदारी करने वाले अन्य नेता फिलहाल बोल नहीं रहे हैं लेकिन आने वाले दिनों में रणनीति बनेगी। हिन्दूवादी नेता विपिन पाण्डे तो खुलकर अपना पक्ष रखने लगे हैं। कांग्रेस की ओर से नीरज तिवारी सर्वाधिक सक्रिय दिखाई दे रहे हैं और उनका दावा भी है।

लोहाघाट सीट पर कांग्रेस और भाजपा की ओर से टिकट के दावेदार तो हैं लेकिन ऐन समय में कौन किस ओर हो जाएगा यह देखने वाली बात होगी। कई तरह की चर्चाएं इस सीट पर हैं।

अल्मोड़ा का मल्ला महल बनेगा हेरिटेज वेडिंग डेस्टिनेशन

अल्मोड़ा। पर्यटन गतिविधियों को सुव्यवस्थित, सतत और प्रभावी ढंग से विकसित करने के उद्देश्य से जिला पर्यटन विकास समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में विभिन्न पर्यटन परियोजनाओं, आधारभूत संरचना के विकास, प्रचार-प्रसार रणनीतियों पर विस्तार से चर्चा की गई।

जिलाधिकारी अंशुल सिंह ने पिछली बैठक के निर्देशों की समीक्षा करते हुए कोसी बैराज क्षेत्र में वाटर स्पोर्ट्स को शीघ्र शुरू करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इससे पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होगी और स्थानीय युवाओं को रोजगार मिलेगा। साथ ही सुरक्षा मानकों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करने को कहा गया।

मल्ला महल को हेरिटेज वेडिंग डेस्टिनेशन के रूप में विकसित करने पर जोर देते हुए प्रति कार्यक्रम 80 हजार रुपये शुल्क निर्धारित करने और इसके व्यापक प्रचार-प्रचार के निर्देश दिए गए। व्यवस्थाओं के बेहतर संचालन के लिए अनुभवी प्रबन्धक की नियुक्ति पर भी बल दिया गया। झाकरसैम मन्दिर के पास ईको हट्स के निर्देश भी दिए गए।

नैनीताल में 52 होमस्टे पंजीयन निरस्त

नैनीताल। जिले के विभिन्न क्षेत्रों में संचालित होमस्टे संचालन पर प्रशासन ने सख्ती दिखाई है। पर्यटन सीजन की शुरुआत के साथ ही सुरक्षित और बेहतर ठहराव उपलब्ध कराने के उद्देश्य से पर्यटन विभाग लगातार निरीक्षण अभियान चला रहा है। अब तक 52 होमस्टे का पंजीकरण निरस्त किया जा चुका है। इसके अलावा बिना पंजीकरण संचालित हो रहे चार होमस्टे पर प्रति इकाई दस हजार रुपये का जुर्माना लगाया गया है। पर्यटन अधिकारी का कहना है कि होमस्टे योजना का उद्देश्य केवल कमरे किराए पर देना भर नही है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

साह-चौधरी समाज की नई कार्यकारिणी

नैनीताल। साह-चौधरी समाज की आमसभा में नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। जिसमें मनोह साह बैरागी को अध्यक्ष, हितेश साह उपाध्यक्ष, भारती साह महिला उपाध्यक्ष, शैलेन्द्र चौधरी सचिव, मयंक साह संगठन सचिव, हर्षित साह उपसचिव, ममता साह महिला उप सचिव, अखिल साह कोषाध्यक्ष, मोहित साह मीडिया प्रभारी और किशन लाल साह ऑडिटर पद पर चुने गये।

लोअर मॉलरोड ट्रीटमेंट कार्य तेज

नैनीताल। ओअर मॉलरोड के स्थायी ट्रीटमेंट कार्य में माइक्रोपाइप ड्रिलिंग के दौरान आई तकनीकी अड़कनों के बाद अब ओडीईएक्स तकनीक अपनाकर काम को आगे बढ़ाया जा रहा है। संशोधित डिजाइन के तहत कार्य में तेजी आने के निर्देश दिए गए हैं।

50 एकड़ गेहूं की नरई जलकर राख

बाजपुर। नगर क्षेत्र में अज्ञात कारणों से खेतों में लगी भीषण आग ने विकराल रूप ले लिया जिससे केलाखेड़ा और नगर में पशु चिकित्सालय के पीछे स्थित खेतों में करीब 50 एकड़ गेहूं की नरई जलकर राख हो गई। सूचना मिलते ही पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया जा सका।

सात शहरों में ड्रेनेज सिस्टम स्वीकृति

नैनीताल। आयुक्त दीपक रावत ने हल्द्वानी समेत सात शहरों में जलभराव से निजात के लिये ड्रेनेज सिस्टम के प्रस्तावों की समीक्षा की। उन्होंने सभी प्रस्तावों को स्वीकृति देते हुए सिंचाई विभाग भेजने के निर्देश दिए हैं ताकि मानसून से पूर्व ड्रेनेज सिस्टम को प्रभावी बनाया जा सके। हल्द्वानी समेत कपकोट, बागेश्वर, गरुड़, पिथौरागढ़, टनकपुर, बनबसा के प्रस्तावों पर मुहर लगी है।

स्मार्ट मीटर को लेकर हंगामा

रुद्रपुर। स्मार्ट मीटर को लेकर कांग्रेस पार्षदों ने यूपीसीएल के अधीक्षण अभियन्ता कार्यालय में हंगामा काटा। आरोप लगाया कि विद्युत अधिकारी उपभोक्ताओं को भयभीत कर खून चूसने वाले स्मार्ट मीटर लगा रहे हैं नेता प्रतिपक्ष नगर निगम गौरव खुराना के नेतृत्व में यह प्रदर्शन हुआ।

अस्थाई चेक पोस्ट का विरोध

किच्छा। नगर के हल्द्वानी मार्ग पर कैलाश माइनिंग द्वारा अस्थाई रॉयल्टी चेक पोस्ट बनाए जाने के विरोध में ग्राम प्रधानों और ग्रामीणों ने विरोध किया है। शान्तिपुरी लिंक मार्ग पर स्थापित इस चेक पोस्ट के कारण वाहनों की लम्बी कतार लग रही है।

परिक्रमा

फचैऽक

गणेश पाण्डेय

हमार यां इलाज करनी, जगरिन्।क दगड़ि डंगरी हुडुक ढोल कांसै थाई, बजूण हैं तू ऐ जां शंकरी बजूणहैं एं जां शंकरी, साइंसलि तरक्की करै बल हम जास छियां उसै छूं, चुटुकि हमन्हैं बभूत भल कम्प्यूटर बणि गई भौत, फटाफट सब काम करनी भेदू गणतू जी रून सब, हमार यां इलाज करनी।

नया शिक्षण सत्र...एडमिशन उत्सव...पढ़ाई की बोहनी...भवन गणना.

नया सेशन शुरू हो गया है तो पढाई-लिखाई के लिए किताबें तो लेनी ही हैं पर क्या करें हो महाराज नये एडमिशन के लिए कई उत्सव सरीखे आयोजन करवा के कुछ बच्चों को सरकारी स्कूल मे दाखिल तो करवा लिया पर उनको पढ़ाने के लिए शिक्षक नाम के जो मजदूर बहुत कम संख्या मे स्कूलों मे तैनात किये थे अब उन्हें किसी दूसरे ठेकेदार के हवाले दूसरी साइट पर काम करने के लिए भेज दिया गया है ।

.....

ये सब ठीक शिक्षा सत्र के शुरुआती दौर में किया है अभी बच्चों की पढाई की बोहनी भी नहीं हुवी थी कि दुकान बन्द होने के कगार पर पहुँच गइ है।

.....

भवन गणना (जनगणना का प्रथम चरण) के नाम पर अगले एक महीने तक शिक्षक भवन गणना में व्यस्त होंगे ,उसके बाद एक महीने करीब ग्रीष्मकालीन अवकाश के चलते स्कूल बन्द, फिर स्कूल खुलते ही बरसात यानी उत्तराखण्ड मे आपदाओं का दौर शुरू हो जाएगा जिस कारण पढाई फिर बाधित। बरसात बीतते ही अर्धवार्षिक परिक्षाओं का शेड्यूल जारी हो जाएगा यानी बिना पढ़े या बहुत कम पढ़कर बच्चे परिक्षा कक्ष मे बैठने पर मजबूर होंगे, फिर शीतकालीन अवकाश, दिवाली, होली, दशहरा, ईद, मुहर्रम, लोहड़ी, बुद्ध पूर्णिमा आदि छुट्टियों के चलते भी पढाई बाधित रहेगी।

.....

फरवरी-मार्च मे बच्चे जब बोर्ड एग्जाम की तैयारी मे जुटे होंगे ठीक उसी वक्त शिक्षकों को जनगणना के दूसरे चरण यानी मनुष्यों की गिनती के काम मे लगा दिया जाएगा। साल भर बिना पढाई के, बच्चों के रिजल्ट का सहज अनुमान लगाया जा सकता है और फिर खराब रिजल्ट का ठीकरा भी उन्हीं शिक्षकों के सिर पर फोड़ा जायेगा जो लगातार दूसरे ठेकेदार के मातहत काम कर रहे थे।

.....

ये तो बात थी थोड़ी बड़ी कक्षाओं के विद्यार्थियों की, जिन बच्चों को अभी शुरुआत करनी थी यानी प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के हालात तो और बुरे होंगे।

.....

क्या ये सार्वजनिक शिक्षा को लगातार बरबाद करने की कोशिशों का हिस्सा नहीं है कि इतने बड़े सिस्टम मे सारी सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन कि ठेका शिक्षकों को ही क्यों दिया जाता है पढाई के अलावा सारे काम शिक्षकों से करवाए जाते हैं, भवन गणना, जनगणना, इस बीच तो कुकुर गणना भी कहीं प्रस्तावित थी, मतदान, मतगणना, पोलियो अभियान, पर्यावरण जागरूकता अभियान, स्वच्छता पखवाड़ा, आपदा ड्यूटी आदि इत्यादि।

.....

जब जनगणना जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम को 5 वर्ष आगे पीछे किया जा सकता है तो जनगणना की रूपरेखा बनाने वाले महान लोगों को यदि शिक्षकों की सेवाएं लेनी ही थी तो इसका मसोदा, समय आदि विद्यार्थियों की पढाई के शैड्यूल के हिसाब से आगे पीछे भी किया ही जा सकता था।

.....

इसी जनगणना के आंकड़ों के हिसाब से आने वाले समय मे बच्चों की बेहतरी के लिए तमाम योजनाएं लागू की जाऐंगी। जो कार्यक्रम शुरुआत मे ही अपने बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहा है उसके आंकड़ों पर आधारित योजनाओं से उम्मीद करना बेमानी सा लगता है।

.....

बरबादि-ए-गुलिस्तां के खातिर बस एक ही उल्लू काफी था,
हर शाख पे उल्लू बैठा है तो हाल-ए-गुलिस्तां का हुई है।

-भगवती पंत, गंगोलीहाट

पीएनजी के बाद एलपीजी करें सरेंडर

हल्द्वानी। एलपीजी की किल्लत के बीच हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड ने पाइप्ड नेचुरल गैस (पीएनजी) के कनेक्शन देना शुरू कर दिया है।

जिलाधिकारी ललित मोहन रयाल ने बताया कि शहर में पीएनजी गैस कनैक्शन हीरानगर, आकाशदीप कालोनी, बजरंग विहार, उदय भवानी-2, उत्तरांचल विहार, जजफार्म, दुर्गापाल गार्डन, मृदुल विहार एवं जोशी कालोनी में पीएनजी कनेक्शन लगा दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि इन क्षेत्रों में बड़ी संख्या में आवेदकों ने पीएनजी कनेक्शन के लिए पंजीकरण कराया जा रहा है। अधिकांश घरों में पाइपलाइन एवं मीटर स्थापित हो चुके हैं। डीएम ने जनता से अपील की है कि ऐसे सभी आवेदक जिन्होंने पीएनजी कनेक्शन के लिए पंजीकरण कराया है, वे हेल्पलाइन नम्बर 1912087899 पर सम्पर्क कर पीएनजी कनेक्शन सक्रिय, निर्गत कराएं। नए उपभोक्ता जिनके घरों में पीएनजी कनेक्शन उपलब्ध हैं उन्हें घरेलू सिलेण्डर का लाभ नहीं दिया जाएगा। डीएम ने सभी पीएनजी कनेक्शन धारकों से अनुरोध किया कि जिनके घरों में पीएनजी कनेक्शन से रसोई गैस आपूर्ति की जा रही है वे उपभोक्ता अपना एलपीजी सरेंडर कर दें ताकि ऐसे लोगों को पीएनजी की निर्बाध आपूर्ति का लाभ प्राप्त हो सके।

पन्तनगर की कॉलोनियों का मुद्दा उठा

किच्छा। विधायक तिलकराज बेहड़ ने देहरादून में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से भेंट कर जनहित के महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की। विधायक ने पन्तनगर एयरपोर्ट विस्तारीकरण की जद में आ रहे संजय कालोनी, मस्जिद कालोनी और वाल्मीकि कालोनी के लगभग 600 परिवारों का मुद्दा प्रमुखता से उठाया। उन्होंने मांग की कि जब तक इन परिवारों के लिए ठोस पुनर्वास योजना न बने, उन्हें न उजाड़ा जाए। सीएम ने आश्वासन दिया कि विश्वविद्यालय प्रशासन से वार्ता कर फिलहाल कोई जल्दबाजी में कार्रवाई नहीं होगी। इसके साथ ही बेहड़ ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के मानदेय में वृद्धि, सेवानिवृत्ति पर दस लाख की सहायता और अनावश्यक कटौती बन्द करने की मांग भी रखी। विधानसभा सत्र के दौरान विधायक ने प्रशासन उधमसिंह नगर द्वारा अचानक बुलाई गई जिला योजना समिति बैठक पर आपत्ति जताई।

पाभै विष्णु मंदिर में भागवतकथा

गंगोलीहाट। पाभै स्थित विष्णु मन्दिर में सात दिवसीय संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा का भव्य आयोजन हुआ। कथा व्यास पं. देवकीनन्दन भट्ट थे जबकि मुख्य यजमान नन्दकिशोर थे। उधर कण्डारीछीना के छुरमल मन्दिर में भागवत कथा के व्यास पं. किशोर जोशी थे। मुख्य यजमान लक्ष्मी देवी, भगवान सिंह भण्डारी, सुन्दर सिंह भण्डारी थे।

नवनीत पांगती ने जीता स्वर्ण पदक

डीडीहाट। नगर के युवा बॉडीबिल्डर नवनीत पांगती ने मुम्बई में हुए इंटरनेशनल बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीता। व्यवसायी पुष्कर सिंह पांगती के सुपुत्र नवनीत ने हल्द्वानी में इसका प्रशिक्षण लिया और प्रतियोगिता के लिये 15 किलो वजन कम किया था।

रानीखेत में कप्तान ने सुनी जनसमस्याएं

रानीखेत। कोतवाली में पुलिस कप्तान चन्द्रशेखर घोड़के ने जनसुनवाई कर लोगों की समस्याएं सुनीं। इस दौरान उन्होंने विभिन्न मुद्दों के समाधान का आश्वासन देते हुए कहा कि शिकायतों का शीघ्र निराकरण किया जायेगा। उपस्थित जनों ने सड़क जाम, पर्यटकों के लिये शौचालय, अनधिकृत रूप से संचालित होमस्टे और उनसे उत्पन्न समस्याओं को प्रमुखता से उठाया।

वनभूमि पर कब्जे को लेकर प्रदर्शन

काशीपुर। कुण्डेश्री क्षेत्र में वन भूमि पर प्लान्टेशन करने पहुंचे वन विभाग के अमले और ग्रामीणों के बीच जबर्दस्त गहमागहमी हुई। रामनगर वन प्रभाग के जुड़का बीट के अन्तर्गत आने वाले गांधी नगर खत्ता में 58 हेक्टेयर भूमि को लेकर ग्रामीणों का प्रदर्शन देखते हुए वन कर्मी बैरंग लौटे।

जिपं सदस्य का चुनाव रद्द

चम्पावत। जिला पंचायत की शक्तिपुरबुंगा सीट के विजेता प्रत्याशी कृष्णानन्द जोशी का चुनाव रद्द कर दिया गया है। दूसरे नम्बर पर रहे प्रत्याशी की याचिका पर जिला न्यायालय ने ये आदेश दिया। इनके खिलाफ विधानसभा क्षेत्र में दो जगह मतदाता सूची में नाम होने का आरोप लगाया गया था। सभी पक्षों को सुनने और दस्तावेजों के परीक्षण के बाद यह आदेश दिया गया।

अल्मोड़ा जंगलों में लाखों की क्षति

अल्मोड़ा। जिले में वनाग्नि से लाखों की क्षति हुई है। कल्मटिया, कसारदेवी, कपड़खान, पौधार और लमगड़ा के जंगलों में लगी आग से चीड़ के जंगलों को भारी नुकसान हुआ है। फायर सीजन में अब तक 43 से ज्यादा बार जंगल आग की चपेट में आ चुके हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

यादों के धुंधलेपन में भी सबके लिये आशीर्वाद था अम्मा के पास

प्रथम पृष्ठ का शेष

साथ खेल में शामिल हो जाती। छोटी होने के कारण गाँव की धार चढ़ने में दिक्कत होती थी। उम्र के उत्तरार्द्ध में वह अपने पैर दिखाते हुए कहती- ''ठण्ड में गोरी गाड़ से पानी लाने और चढ़ाई चढ़ने के नित अभ्यास ने कठोर बना दिया लेकिन इसका परिणाम बाएं पैर में आज भी थोड़ा दिक्कत है।'' ऐसा ही भोलापन सब बच्चों में था लेकिन बड़े बुजुर्गों का संरक्षण और सीख अपनी संस्कृति को पोषित करती थी। उम्र बढ़ने के साथ धीरे-धीरे जिम्मेदारी का अहसास होने लगा।

ज्वार-मिलम को याद करते हुए वह कहती हैं- पानी के लिये गोरीगंगा गाड़ जाया करते थे। महिलाओं की टोली कपड़े धोने, पानी लेने के लिये जब गाड़ जाती थी कई बार हुड़क्याणियों के रसीले गायन सुनने को मिलते। ऐसा नजारा तिब्बत व्यापार के समय भी होता था। व्यापार के लिये जाते समय विदाई को जाते थे और आते समय स्वागत को जुटते थे। महिलाएं और युवतियां घरों में दन-कालीन बुनती थीं। खेतों में फाफर, आलू, सरसों की हरियाली खुशी देती थी।

हरकी देवी का विवाह जिस परिवार में हुआ था वह अपने इलाके के ध नाड्य परिवारों में गिना जाता रहा है। व्यापार से लेकर सामाजिकता का बड़ा दायरा इनका था। बाला सिंह पांगती लम्बे अर्से तक पधानी संभालते रहे। ऐसे में इधर-उधर से आने-जाने वालों का मुख्य केन्द्र इनका घर हुआ करता था। क्वीरीजिमिया, साई पोलू, मदकोट तमाम जगहों से मिलने वाले व यात्री आते थे। पांगती जी की दुकान भी थी, ऐसे में सौदे-पत्ते वालों का आना-जाना भी लगा रहता। उनका दयालुपन ऐसा था कि जिसे किसी प्रकार की परेशानी हो वह भी वहीं आता। ऐसे में दिनभर का चूल्हा-चक्का चलता रहता। घर की सयानी महिलाओं के साथ बहू हरकी देवी भी मेहमानों के लिये रसोई की तैयारी में जुटती।

इसके अलावा प्रधान पांगती जी का नियम था वह साल में एक बार पटवारी सहित खास लोगों व विशेषकर शिक्षकों को अपने घर पर खाने पर आमंत्रित करते। कम संसाधनों के उस दौर में ऊपर से दुर्गम क्षेत्र में इस प्रकार की तैयारी और विचार बहुत बड़ी बात है। इन सारी स्थितियों को समझने और जीने वाली हरकी देवी ने यही संस्कार अपने बच्चों को दिये थे। इसका प्रभाव सामाजिक ताने-बाने में दिखाई देता है। इनका परिवार जिस तनमयता के साथ सामाजिक सरोकारों से जुड़ा है, उसे देख हरकी देवी का मन खुशियों से भरा था और वह अपने में ही मगन रहती थीं। वह एकमात्र परिवार की धरोहर नहीं बल्कि एक संस्कृति सयानी बुजुर्ग थीं जिनकी उपस्थिति भर से कायदों का भान बना रहता। हर परिवार में ऐसे संरक्षक का होना गौरव की बात है। पिघलता हिमालय परिवार अम्मा को श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

उत्तराखण्ड राज्य गठन की रजत जयंती पर हुई थी विशेष भेंटवार्ता

पि.हि. प्रतिनिधि

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस के अवसर श्रीमती हरकी देवी से पिघलता हिमालय की विशेष भेंटवार्ता हुई थी। अपने सौ बसन्त पूरे करने वाली अम्मा के सपने केवल सपने नहीं बल्कि अनुभवों का पिटारा रहे हैं जो हमें सजग करने वाले हैं। बातचीत में उन्होंने अपने दौर के को याद करते हुए कहा था कि कितने कठिनाई भरे दिनों के बाद पृथक पर्वतीय राज्य की स्थापना हुई है और हम हैं कि अपने मूल को भूलते जा रहे हैं।

अपनी यादों के साथ जीवन के सौ बसन्त देख चुकी श्रीमती हरकी देवी पांगती ने उम्र के इस पड़ाव में कभी भी झल्लाहट नहीं की बल्कि उनसे मिलने पर वह साफ बोलने में दिक्कत के बावजूद वह जिस मासूमियत से कहती थीं- 'जोहार में सब सिपाही आ गये हैं। घर-बार कैसा होगा?' इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि उन्हें अपने मुलुक की कितनी चिन्ता थी। उनसे मिलने जा रहे लोगों व ईष्ट-मित्रों को देख उन्हें बेहद खुशी होती क्योंकि जो अपनापन व वातावरण उन्होंने पाया था वह सबको जोड़कर रखने वाला है। ऐसे कई अवसर आए जब वह अपने प्रिय पत्र 'पिघलता हिमालय' के साथ बातचीत में पुराने दौर से लेकर वर्तमान तक की यादों को स्मरण कर बुदबुदाती रहती थीं। सबसे पहले सन् 1917 में पिघलता हिमालय में उनके बारे में छपा जब वह अपने सुपुत्र नवराज पांगती, वित्त नियन्त्रक रेलवे वाराणसी के पास बनारस में थीं। उस समय सीमान्त क्षेत्र के तमाम लोगों को एकजुट कर श्रीमान नवराज जी ने डीएलडब्लु स्थित अपने बंगले पर भेंटघाट आयोजन भी किया था। उसके बाद कई अवसर हुए और अन्तिम भेंटवार्ता यह थी।

चारधाम यात्रा में उमड़ चुके हैं श्रद्धालु

रुद्रप्रयाग/चमोली। चारधाम यात्रा में श्रद्धालुओं का तांता लगा हुआ है। केदारनाथ, बद्रीनाथ, यमुनोत्री, गंगोत्री में लगातार यात्रियों की टोली जा रही है। इस सत्र की शुरुआत के दिन से ही हजारों यात्रियों की भीड़ दिखाई दे रही थी। दस दिन में ही चार लाख श्रद्धालु पहुंच चुके थे।

यात्रा संचालन के लिये राज्य सरकार और प्रशासन द्वारा किये गये इन्तजाम में सुरक्षित और सुगम यात्रा का लक्ष्य है। यात्रा के दौरान यात्रियों, श्रद्धालुओं एवं स्थानीय नागरिकों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए चारधाम यात्रा मार्गों सहित प्रमुख धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों पर पेयजल, शौचालय, स्वास्थ्य सेवाएं, स्वच्छता, पार्किंग एवं यातायात को सुदृढ़ एवं व्यवस्थित किया गया है। राज्य सरकार ने यात्रा व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में भ्रामक जानकारी प्रसारित करने वालों तथा गन्दगी फैलाने वालों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए हैं ताकि यात्रा की पवित्रता एवं व्यवस्थाएं बनी रहें। राज्य आपातकालीन परिचालन केन्द्र में चारधाम यात्रा कपाट खुलने से लेकर आने वाले यात्रियों का डाला उपलब्ध है। जिसके अनुसार सबसे ज्यादा श्रद्धालु बाबा केदार, उसके बाद बद्री विशाल पहुंचे हैं। ग्रीष्म के पर्यटन हेतु भी सैलानी पहाड़ उमड़ रहे हैं।

जागेश्वर धाम में कड़े नियम

शस्त्र, मोबाइल लाने पर प्रतिबन्ध

दन्या। प्रसिद्ध जागेश्वर धाम मन्दिर परिसर में कड़े नियम लागू कर दिये गये हैं ताकि उसकी पवित्रता और नियमों का उल्लंघन न हो। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण देहरादून मण्डल ने इस सम्बन्ध में दिशा निर्देश जारी कर दिये हैं। मन्दिर परिसर में इस सम्बन्ध में सूचना भी बोर्ड पर लग चुकी है। जिसमें स्पष्ट किया गया है कि मन्दिर परिसर में किसी भी तरह की बैठक, पार्टी, मनोरंजन कार्यक्रम, शादी, जन्मदिन या सालगिरह मनाने की अनुमति नहीं होगी। नशे या शराब के सेवन के बाद परिसर में प्रवेश पर रोक है। सूर्योदय से पहले और सूर्यास्त के बाद मन्दिर परिसर में प्रवेश पूरी तरह प्रतिबन्धित रहेगा। श्रद्धालुओं को पालतू जानवर साल लाने की भी अनुमति नहीं दी जाएगी। इन नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

बताते चलें कि कुछ दिन पहले ही यूपी के एक डीएम ने धाम में अपने सुरक्षा गार्ड के साथ प्रवेश किया। असलाह के साथ आने पर पुजारियों ने विरोध किया था। साहब के इस रौब पर बराबर विरोध हुआ। मामला बढ़ता देख बाद में डीएम ने इस बात के लिये क्षमा मांगी थी।

HIMALAYAN MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

कवीन्द्र बृजवाल के 'फिटकौम एकेडमी' का शुभारम्भ

मुनस्यारी। आन्तरिक तथा बाह्य व्यक्तित्व के धनी, देश-विदेश में कई मैराथन में प्रतिभाग कर चुके कवीन्द्र सिंह बृजवाल सुपुत्र श्री भूपाल सिंह बृजवाल निवासी हल्द्वानी जिनकी प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात हायर सेकंडरी घोड़ाखाल नैनीताल, उच्च शिक्षा पन्तनगर विश्वविद्यालय उधम सिंह नगर, एमबीए की डिग्री, व्यवसायिक शिक्षा बंगलौर के पश्चात भारत के कुछ प्रसिद्ध कम्पनी में सेवा करते मारूति कम्पनी को भी अलविदा कर दिया, अपने महत्वाकांक्षी प्रवृत्ति के चलते स्वयं की 'फिटकौम एकेडमी' खोलने का निर्णय लिया। उन्होंने अपने पैतृक गाँव तल्ला दुम्मर मुनस्यारी के रामलीला मैदान में ग्राम के सभी गणमान्य बुजुर्ग महिला, पुरुष, बच्चे, युवाओं के बीच अपने कार्ययोजना के विषय, उद्देश्य को रक्खा।

तल्ला दुम्मर में हुई सभा में मंचासीन ललितसिंह बृजवाल सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य, त्रिलोक सिंह बृजवाल सेवानिवृत्त बैंक अधिकारी, चन्द्र सिंह बृजवाल सेवानिवृत्त बैंक अधिकारी बैंक आफ बड़ौदा, जगदीश सिंह बृजवाल सेवानिवृत्त अध्यापक, ग्राम प्रधान पंकज सिंह बृजवाल, महिला मंगल दल, युवक मंगल दल, सभी के द्वारा अपने विचार व्याख्यान से श्री कवीन्द्र के कार्य पहल का सराहते उज्जवल भविष्य की कामना की।

सभा के अन्त में उपस्थिति बच्चों को पुरस्कृत करने के साथ बुजुर्ग महिलाओं को सम्मान स्वरूप उपहार भेट किये।

सभी ग्रामीणों ने जीवनोपयोगी दिये जाने वाली रिद्धि-सिद्धि को दृढ़ संकल्पता के साथ अमल करने का आश्वासन दिया।

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चौकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा Thats मो. 9458920379
APNA GHAR 6396098804
चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया
YOGA MEDITATION HOMELY FOOD LIVE MUSIC BIRTHDAY WEDDING

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236 मो.- 8958525979, 9411134775

प्रिया मेडिकल
खड़ी बाजार, गंगोलीहाट
प्रदीप कुमार पन्त

आर.के. इण्टरप्राइजेज
खैरना, गरमपानी (नैनीताल)
रमेश चन्द्र पाण्डे

पाण्डे हार्डवेयर एण्ड पेंट्स
बाड़ेछीना (अल्मोड़ा)
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स का विश्वसनीय प्रतिष्ठान।

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क 7351285555

HOTEL AASHISH INN
GANGOLIHAAT

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)